एपिसोड - 34
'The Politics of Climate
पर्यावरण परिवर्तन और राजनीति'

मुख्य शोध एवं आलेख - श्री देबस्त दास
हिंदी अनुवाद - डॉ० आर.एस. यादव

कलाकार : -

(1) **श्री सुरेन्द्र शर्मा (57 वर्ष)** - अध्यापक
(2) **देबी (57 वर्ष)** - सुरेन्द्र की पत्नी (काम-काजी महिला)
(3) **मधुश्री (20 वर्ष)** - सुरेन्द्र की पुत्री - शोधार्थी
(4) **आलोक (54 वर्ष)** - सुरेन्द्र का छोटा भाई
(5) **कल्याणी (50 वर्ष)** - आलोक की पत्नी (बैंक कर्मचारी)
(6) **अरविन्द (24 वर्ष)** - आलोक का बटा (अध्ययनरत)

दृश्य 1

(रविवार का दिन, घर पर TV चल रहा है | मधुश्री का प्रवेश..... अपने माता-पिता के साथ, सोफा-सेट पर बैठ जाती है और जिज्ञासा बस TV देखने लगती है|)

देबी : मधुश्री क्या बात है ? ऐसे क्यों देख रही हो ?

मधुश्री : आश्चर्य की क्या बात है ? पापा TV जो देख रहे हैं | What a great Surprise?

सुरेन्द्र : वो, ऐसा नहीं है | मैं समाचार देखने के लिए अपनी बारी का इंतज़ार कर रहा हूँ |

मधुश्री : (हँसते हुए) मैं समझी....समाचारों की लाइन में हो |

देबी : मधु | अपने पापा को क्रोध मत दिलाओ |

मधुश्री : ठीक है....ठीक है |मैं तो बताने के लिए चली आई ठी कि चाचाजी याद कर रहे हैं |

सुरेन्द्र : कौन....आलोक |

मधुश्री : हाँ ! आलोक चाचा | वो कोलकाता में ही हैं |

देबी : कलकत्ता में | मुझे बताया नहीं | किस काम से आये हुए हैं ?

मधुश्री : वे सभी, एक शादी में आये हुए हैं |

सुरेन्द्र : यहाँ घर पर नहीं आ रहे | वो यहाँ हैं और हमें बताया तक नहीं |

मधुश्री : पापा, इसे इतना गंभीरता से मत लो | चाचा, आप लोगों से बात करना चाह रहे थे | परन्तु आपका फ़ोन ही नहीं मिल रहा था | कह रहे थे, कल सुबह बात करेंगे |

सुरेन्द्र : अच्छा |

मधुश्री : चाचा कह रहे थे, एक urgent काम है |

सुरेन्द्र : कोई गंभीर मशला है क्या ?

देबी : सब ठीक तो है ना !

मधुश्री : वो मम्मी...आप तो हर मामले को इतना बड़ा बना देती हो | चिंता मत करो | सभी कुशल से हैं |

सुरेन्द्र : मधु, समय पर ये सब कुछ समझ में आ जाएगा |

मधुश्री : अब मैं बड़ी हो गई हूँ | कोई दूध पीने वाली बच्ची नहीं हूँ ? छोटी-छोटी बातों पर चिंता करना, स्वास्थ्य के लिए भी ठीक नहीं है | मैं अपने प्रोजेक्ट का काम कर रही थी | मुझे दस मिनट के बाद ही खाने के लिए कहना |

देबी : अच्छा बाबा - अच्छा |

सुरेन्द्र : मुझे तो अब भी चिंता हो रही है | क्या बात हो सकती है ? आलोक पर मुझे गर्व है | वो कभी दूसरों को परेशान नहीं करते हैं |

देबी : फिर क्या काम हो सकता है ? अच्छा कल सुबह सारी बातें करते हैं |

सुरेन्द्र : अच्छा, आज क्यों नहीं, उसने फ़ोन पर बात की | हम चले आते |

<u>दृश्य : 2</u>

(दूसरे दिन की सुबह....सुरेन्द चाय के साथ सुबह का समाचार पत्र पढ़ रहा है | मधुश्री और देबी का प्रवेश)

मधुश्री : गुड मॉर्निंग पापा | क्या कोई विशेष समाचार !

सुरेन्द्र : क्या तुम्हारे चाचा जी का फ़ोन आया था ?

मधुश्री : लगता है, पापा तो रात भर सो नहीं पाए होंगे |

(मोबाइल - फ़ोन की घंटी बजती है)

सुरेन्द्र : हेल्लो | हाँ आलोक, कैसे हो तुम ? तुम घर पर आ रहे हो ना | अच्छा....हाँ....मैं समझा....ठीक है .....

 # फोन कट जाता है ##

देबी : अच्छा....सब ठीक है | क्या कह रहे थे ?

सुरेन्द्र : वो जल्दी में थे और हवाई-अड्डे से ही फ़ोन किया था | कह रहे थे सब ठीक है | और आश्चर्य की बात - वो कह रहे थे - वे गाँव लौटना चाहते हैं |

देबी : मैं कुछ समझी नहीं | क्या वो गाँव में स्थाई निवास बनाना चाहेंगे |

सुरेन्द्र : हाँ ! आलोक ने एक बार जो ठान लिया, करके ही मानते हैं | हो सकता है, अपना दिल्ली का मकान बेचकर अपने गाँव चले आएँ |

मधुश्री : परन्तु पापा, वो कई वर्षों के बाद आ रहे हैं | क्या यहाँ के माहौल में कल्याणी चाची ढल पायेंगी |

सुरेन्द्र : क्यों नहीं | साफ़-सुथरी हवा और पानी | खाने को ताजा सब्जियाँ और घर के तालाब से मछलियाँ (हँसते हुए) |

दृश्य - 3

(एक और रविवार....सुरेन्द्र और आलोक का परिवार एक साथ, खाने की टेबल पर)

अरविन्द : क्या लजीज़ मछली बनाई है - ताई जी ने | मजा आ गया |

मधुश्री : क्या तुम दिल्ली में मच्छी नहीं बनाते |

अरविन्द : बनाते हैं | परन्तु वो real fish नहीं होती | सब कुछ फ्रोजन होता है |

कल्याणी : किसी भी खाने की वस्तु को ले लीजिये - चाहे सब्जियाँ हो, फल हो, मीट हो - या तो मार्किट में शीतगृहों से आ रहे हैं या फिर उनमें Preservative मिले हुए होते हैं |

आलोक : बड़े भाई, आपको तो पता ही होगा ये कितनी बड़ी समस्या है, पर हम कर ही क्या सकते हैं ?

सुरेन्द्र : यहाँ पर भी यही समस्या है | आजकल स्थानीय स्तर पर मिलने वाली मछलियों की उपलब्धता कम होती जा रही है | लोगों ने आंध्रप्रदेश और उड़ीसा के शीतगृहों से आने वाली मछलियाँ खानी शुरू कर दी हैं| कोई भी सुरक्षित नहीं है |

आलोक : अभी तो शुरुआत है | हमारा अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है |

सुरेन्द्र : आप ठीक कह रहे हैं | पर हम कर ही क्या सकते हैं ? सब कुछ भगवान पर टिका हुआ है | अच्छा ये बताओ, तुम्हारी क्या योजना है? क्या आप सभी, गाँव में ही बसने की योजना बना रहे हो |

आलोक : हम यहाँ बसने जा रहे हैं या नहीं, ये इतना महत्वपूर्ण नहीं है | हम क्यों बसने जा रहे हैं, ये जानना जरुरी है | दिल्ली की आराम और मजेदार ज़िंदगी छोड़कर, क्यों, गाँव में रहना चाहते हैं, ये जानना आवश्यक है ?

सुरेन्द्र : हाँ... यही सवाल हमारे जहन में भी उठ रहे हैं |

मधुश्री : अच्छा अंकल, अब इस रहस्य पर से पर्दा भी तो उठाइये |

आलोक : रहस्य....(हँसते हुए) खूब कहा मधु |

देबी : आलोक भइया, तुम तो अब भी मजाक करने से नहीं हटते | बचपन की जो आदत है |

अरविन्द : आप ठीक कह रही हैं, ताई जी | पापा तो अब भी इसी प्रकार के नाटकों की किताबें पढ़ते हैं |

आलोक : यही तो मेरी एक कमजोरी है | परन्तु यहाँ उनका कोई रोल नहीं है ? यह मेरा अपना निर्णय है |

सुरेन्द्र : मेरे लिए तो अब भी एक रहस्य ही है |

देबी : कुछ विचित्र नहीं लग रहा है |

मधुश्री : चाचाश्री | क्या ये सब प्रदूषण के कारण से लिया गया निर्णय है !

आलोक : सही पकड़ा (हँसते हुए) ये है मेरी होशियार बिटिया |

सुरेन्द्र : यदि तुम यहाँ रहने के लिए आते हो, तो हमारे लिए, इससे बड़ी और क्या खुशी होगी |

देबी : आप क्या कहना चाहते हो ?

सुरेन्द्र : आलोक मुझे क्षमा करना | क्या मैंने कोई गलत कहा है !

आलोक : नहीं भइया, आपने ठीक कहा है | इतने सालों के बाद मैं ताज़ी हवा और नीले आसमान के नीचे साँस लेना चाहता हूँ |

सुरेन्द्र : ## (सभी कुछ क्षणों के लिए शांत हो जाते हैं) ##
कल्याणी और अरविन्द का क्या ख्याल है ?

आलोक : अच्छा मैं सारी कहानी बताता हूँ | ये बिचार कुछ सालों से मेरे मन में घूम रहा था | तुम्हें जानकर खुशी होगी कि अरविन्द की एक जर्मन कंपनी में जॉब लग गयी है | छःह महीनों बाद वह जर्मनी चला जाएगा | कल्याणी और मैंने, स्वैच्छिक सेवानिर्वृति के लिए सोच लिया है | एक अच्छी ज़िंदगी जीने के लिए हमारे पास काफी पैसा है | सारा

परिवार मेरे निर्णय से सहमत है, और अब, पीछे मुड़ने की कोई बात ही नहीं है |

(फिर से एक गहरी शान्ति छा जाती है)

सुरेन्द्र : अच्छा ये बात है ! अच्छा ये बताओ, जो प्लाट मैंने चुना है, वह कैसा है ?

अरविन्द : ताऊजी....मुझे ये दुसरे वाला पसंद है |

कल्याणी : मुझे भी यही पसन्द आ रहा है |

आलोक : मुझे इस बारे में कुछ नहीं कहना | अच्छा भइया, क्या आपने प्लाट के मालिक से बात की है |

सुरेन्द्र : हाँ मैंने बात की है और यदि आप हाँ कहो तो मैं आगे चर्चा करूँगा |

आलोक : हाँ भइया ! आप इसे फाइनल कर दो, और कहें तो मैं, अग्रिम धनराशि भी दे देता हूँ |

सुरेन्द्र : अच्छा | ये काम मेरे पर छोड़ दो |

मधुश्री : अंकल क्या मैं कुछ कह सकता हूँ ?

आलोक : मधु क्यों नहीं ! कहो क्या कहना है ?

मधुश्री : मेरा सोचना है कि, यह विषय अलग-अलग पसन्द का नहीं हो सकता है | यदि हम सुविचार करें तो पायेंगे कि प्रदूषित पर्यावरण और ग्लोबल वार्मिंग, आज कितनी बड़ी समस्या बनते जा रहे हैं |

अरविन्द : दीदी, आप बिल्कुल सही कह रही हो | अब ये कोई हव्वा नहीं है, परन्तु हकीक़त है |

मधुश्री : अरविन्द जो मैं कहना चाह रही हूँ वह यह है कि पर्यावरण में बदलाव और ग्लोबल वार्मिंग का असर धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है और हम सभी इसके बढ़ते प्रभावों को महसूस कर सकते हैं | पर्यावरण वैज्ञानिकों का मानना है कि विश्व का तापमान 2100 तक 1.4० C से 5.8C तक औसतन बढ़ सकता है |

अरविन्द : ये तो खतरे की घंटी की ओर इशारा कर रहा है |

मधुश्री : इसके पीछे कई कारण हैं | सबसे बड़ी चिंता है ग्रीन हाउस गैसों की जैसे कि मीथेन, कार्बन डायो-ऑक्साइड, ओज़ोन, क्लारो-फ्लोरो कार्बन और नाईट्रस ऑक्साइड | शोधों से पता चला कि सन 1750 के बाद कार्बन डाई-ऑक्साइड और मिथेन गैसों की मात्रा 36% और 148% तक बढ़ चुकी है |

आलोक : मधु बेटी....तुम्हारी जानकारी तो अद्भुत है |

देबी : आलोक ! वो स्थानीय विज्ञान क्लब की सदस्य है |

मधुश्री : चाचाजी ! ये मेरा अध्ययन का क्षेत्र है |

सुरेन्द्र : हाँलांकि इस विषय पर मेरी कोई विशेष जानकारी नहीं है, परन्तु समाचार पत्र पढ़ता रहता हूँ |

कल्याणी : दादा ! तुम्हें पता ही है, आजकल प्रदूषण कितना फ़ैल चुका है |

सुरेन्द्र : (हँसते हुए) ये तो विकास का तोहफा है जो प्रकृति हमें दे रही है |

मधुश्री : पापा वो तो ठीक है, परन्तु इसके परिणाम तो हमें ही भुगतने होंगे |

अरविन्द : मधुश्री जो कारक आपने अभी बताये थे, उन्हें मानव जनित कारकों में लिया जाता है |

मधुश्री : सही कहा -

अरविन्द : इसके अलावा भी कुछ दूसरे कारण हैं |

मधुश्री : कुछ इसको बढ़ावा देने में सहायक हैं और कुछ इसे सीधे बढ़ावा देते हैं |

(मधुश्री बाहर जाती है)

अरविन्द : दीदी की अद्भुत पकड़ है अपने विषय पर |

देबी : अरविन्द ! पर्यावरण तो उसका फैशन है |

अरविन्द : क्या दीदी ने अपना शोध ग्रन्थ लिख लिया है ?

सुरेन्द्र : मधु अपनी थीसिस लिखने में व्यस्त है और शीघ्र ही इसे अंतिम रूप दे देंगी |

मधुश्री : (चलकर आती हुई) पर्यावरण में हो रहे बदलावों के पक्ष में बहुत से सन्दर्भ हैं जो मानव की गतिविधियों से प्रभावित होते हैं |

आलोक : ये तो ठीक है परन्तु इसके प्रभाव किस रूप में पड़ने वाले हैं, ये भी जानना आवश्यक है |

सुरेन्द्र : मधुश्री ! हम सभी इसे जानना चाहेंगे |

मधुश्री : अच्छा मैं बताती हूँ | पर्यावरण परिवर्तन, मौसम में आये बदलावों को दर्शाता है जो कुछ दशकों से लेकर, हज़ारों वर्षों के अन्तराल के दौरान नजर आने लगते हैं |

देबी : देखिये ! हमारे ही गाँव में, जो मौसम 20 वर्ष पूर्व होता था, वह आज नहीं है |

आलोक : अच्छा, इसके क्या गंभीर परिणाम हो सकते हैं ?

मधुश्री : चाचाजी ! इसके परिणाम बड़े ख़तरनाक हो सकते हैं | समुद्रों का जलस्तर बढ़ जाएगा, बाढ़ की समस्या बढ़ेगी, जहाँ अब अच्छी वर्षा होती है और बर्फ गिरती है, हो सकता है आने वाले समय में, वहाँ सूखा पड़े और तापमान बढ़ने से बर्फ गिरना ही बन्द हो जाए | नदियाँ सूख जाएँ, पैदावार गिर सकती है, कई जीवों की और वनस्पतियों की प्रजातियाँ विलुप्त हो जायेंग और चक्रवातों व आँधी-तूफानों के आने की दर बढ़ जाए |

सुरेन्द्र : क्या ये संभव है ?

मधुश्री : यदि ग्लोबल वार्मिंग की गति ऐसे ही बनी रही तो विनाश door नग हीं |

देबी : फिर हम कोई कदम क्यों नहीं उठा रहे ग ?

अरविन्द : राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई पर्यास हो रहे हैं |

मधुश्री : बहुत सारी गैर-सरकारी संस्थायें अच्छा काम कर रही हैं | परन्तु राजनैतिक स्तर पर समस्यायें हैं |

कल्याणी : यहाँ पर भी राजनैतिक...

देबी : आप अपनी राजनीति करते रहो | मैं चाय-कॉफ़ी की तैयारी करती हूँ |

मधुश्री : हाँ मम्मी....अच्छा विचार !

ध्वनी प्रभाव

आलोक : कल्याणी भाभी के कथन में भी रहस्य छुपा है |

मधुश्री : नहीं...ऐसा नहीं है |

आलोक : परन्तु कोई भी त्याग करने के लिए तैयार नहीं है |

मधुश्री : हाँ....क्योंकि विकास और ग्लोबल वार्मिंग का एक-दूसरे के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है |

अरविन्द : हाँ....इसमें कोई दो राय नहीं है |

मधुश्री : विकासशील राष्ट्रों के अपने तर्क हैं |

अरविन्द : मधुश्री.....विकसित राष्ट्र भी अपनी तकनीक दूसरे देशों को नहीं देना चाहते हैं |

सुरेन्द्र : मैंने पढ़ा है और संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि तकनीकी हस्तांतरण से, हम पर्यावरण संरक्षण में महति भूमिका निभा सकते हैं |

मधुश्री : हाँ पापा, आपने ठीक कहा है | तकनीकी के हस्तान्तरण और उसे स्थापित करके, पर्यावरण प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग की समस्या को कम कर सकते हैं |

अरविन्द : इसमें ज्ञान और अनुभवों को सांझा करके आगे बढ़ा जा सकता है |

मधुश्री : संस्ती ऊर्जा के अभाव में विकासशील राष्ट्र, कई बाधाओं का सामना कर रहे हैं |

आलोक : अब सवाल आता है कि ग़रीब राष्ट्र किस प्रकार तकनीकी के हस्तान्तरण से लाभान्वित हो सकते हैं ?

मधुश्री : चाचाश्री ! पैरिस समझौते के तहत, सभी देशों ने इसके लिए सहमति जताई है | इसमें सटीक तकनीकी का विकास और उसका हस्तान्तरण भी शामिल है | इसके लिए संयुक्त राष्ट्र की तकनीकी अधिशासी समिति और मौसम तकनीक केन्द्रों का नेटवर्क मिलकर काम करेंगे, जिससे कि इन लक्ष्यों के प्राप्त किया जा सके |

अरविन्द : मेरे विचार में इस पर काम तेज गति से चल रहा है |

मधुश्री : अरविन्द, ठीक कह रहे हो | परन्तु पाश्चात्य देशों की राजनीति इसमें बाधा बनी हुई है | कॉपन हेगन पर्यावरण सम्मलेन का मुख्य मुद्दा तकनीकी हस्तान्तरण ही था |

अरविन्द : परन्तु पर्यावरण का मुद्दा बिल्कुल अलग तरह का है | कंपनियों के पास नई तकनीकों के पेटेंट हैं और वो इसे छोड़ना नहीं चाहती हैं |

कल्याणी : मेरे विचार में प्राइवेट कम्पनियाँ इन बाधाओं की जिम्मेदार हैं |

मधुश्री : हाँ चाची जी | बड़ी कम्पनियां इस प्रकार की बन्दर-बाँट में विश्वास नहीं करती हैं | हालांकि ऐसा है नहीं

समापन संगीत